IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

किन्नर विमर्श : कल आज और कल

ज्योति शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
यूनिवर्सिटी इंस्टिट्यूट ऑफ़ टीचर्स ट्रेनिंग एंड रिसर्च,
चंडीगढ़ युनिवर्सिटी,मोहाली,पंजाब

सारांश: समकालीन हिंदी साहित्य को अपने परिवेश की उपज मानना होगा। देश का आज़ाद होना शिक्षा का प्रसार, तकनीकी क्रांति,संस्कृति का आदान-प्रदान और मनुष्य का और उसके समाज का धीरे-धीरे सचेत बनता जाना,यही सब समकालीन साहित्य को लेखन के लिए एक नई जमीन प्रदान करते हैं लेकिन आजादी से पहले, आजादी के समय और आजादी के बाद; परिवेश अपनी भूमिका बनाने के लिए अपनी जमीन खुद तैयार करता रहा है और आगे भी करता रहेगा। आज साहित्य का कोई भी रूप इससे अछूता नहीं रहा वहीं फिल्मों के माध्यम से इसे दर्शाना अपने आप में समाज को जागरूक करना है मेरे इस प्रपत्र में ऐसे ही एक विशिष्ट वर्ग का आस्तित्त्व दिखाई देता है, जिसे फिल्मों के माध्यम से केंद्र में रखते हुए; बिखराव, टूटन, विखंडन, विघटन, सत्ता, बाजार, सब के हिस्से को दर्शाने का प्रयास हैं और वह है -किन्नर विमर्श। "किन्नर विमर्श : कल आज और कल" इस प्रपत्र के जरिए समाज में उनका स्थान,उनकी स्थापना,इतिहास से अवगत होते हुए, समाज में अपने अस्तित्त्व को खोज कर स्थापित करने का जो प्रयास है; को दर्शाया जाएगा।

शब्द संकेत - यौन अभिविन्यास और लिंग विविधता,ट्रांसजेंडर,जेंडर विविधता,जेंडर बाइनरी सिस्टम।

परिचय

समकालीन हिंदी साहित्य को अपने परिवेश की उपज मानना होगा। देश का आज़ाद होना शिक्षा का प्रसार,तकनीकी क्रांति,संस्कृति का आदान-प्रदान और मनुष्य का और उसके समाज का धीरे-धीरे सचेत बनता जाना,यही सब समकालीन साहित्य को लेखन के लिए एक नई जमीन प्रदान करते हैं। लेकिन आजादी से पहले,आजादी के समय और आजादी के बाद; परिवेश अपनी भूमिका बनाने के लिए अपनी जमीन खुद तैयार करता रहा है और आगे भी करता रहेगा। आज साहित्य का कोई भी रूप इससे अछूता नहीं रहा। वहीं फिल्मों के माध्यम से इसे दर्शाना अपने आप में समाज को जागरूक करना है। मेरे इस प्रपत्र में ऐसे ही एक विशिष्ट वर्ग का आस्तित्त्व दिखाई देता है,जिसे फिल्मों के माध्यम से केंद्र में रखते हुए; बिखराव,टूटन,विखंडन,विघटन,सत्ता,बाजार,सब के हिस्से को दर्शाने का प्रयास हैं और वह है -किन्नर विमर्श। हम एक ऐसे समाज में रहते हैं जो लिंग और लिंग द्वारा गहराई से संरचित है। लोगों का 'पुरुष' या 'महिला' के रूप में वर्गीकरण हमारे समाज में हर स्तर पर व्याप्त है। जेंडर विविधता जेंडर बाइनरी सिस्टम को कई तरीकों से चुनौती प्रदान करती है- इंटरसेक्स,थर्ड या अन्य जेंडर,जेंडर के बाहर की स्थिति,जेंडर क्वीर आदि के माध्यम से। 'ट्रांसजेंडर' श्रेणी के लोग भी जेंडर बायनेरिज़ के इस सामान्यीकरण को चुनौती देते हैं। भारत में हिजड़ों / किन्नरों जैसे ट्रांसजेंडर लोगों के कई सामाजिक-सांस्कृतिक समूह हैं,और अन्य ट्रांसजेंडर पहचान जैसे - शिव-शक्ति,जोगता,जोगप्पा,अरधी,सखी,आदि। इन उपसमूहों के सभी सदस्यों को समकालीन भारत में हर तरह से गंभीर भेदभाव और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है और उनके साथ मौखिक दुर्व्यवहार,शारीरिक और यौन हिंसा जैसे अनुचित व्यवहार किए जाते हैं; झूठी गिरफ्तारी; उनकी पैतृक संपत्ति,सेवाओं और शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश में हिस्सेदारी से इनकार; और परिवार,शैक्षणिक संस्थानों,कार्यस्थल,स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली,सार्वजनिक स्थानों जैसी

कई प्रणाली में उत्पीड़न। शायद ही कभी,हमारा समाज उस आघात,दर्द और पीड़ा को महसूस करता है जिसे ट्रांसजेंडर समुदाय के सदस्य करते हैं।ट्रांसजेंडर समुदाय के सदस्यों की जन्मजात भावनाओं से न तो गुजरते हैं और न ही उनकी सराहना करते हैं।

पृष्ठभूमि

ट्रांसजेंडर समुदाय में हिजड़ा,किन्नर,कोठी,अरवानी,जोगप्पा,शिव-शक्ति आदि शामिल हैं और एक समूह के रूप में,हिंदू पौराणिक कथाओं और अन्य धार्मिक ग्रंथों में हमारे देश में उनकी एक मजबूत ऐतिहासिक उपस्थिति है। काम शास्त्र नामक साहित्य प्राचीन हिंदू ग्रंथ है जिसमें उन्हें 'तृतीयापाकृति' या तीसरे लिंग के रूप में संदर्भित किया गया है,जो वैदिक और पौराणिक साहित्य का एक अभिन्न अंग रहा है,यह उन पुरुषों को वर्गीकृत करता है जो अन्य पुरुषों को 'तीसरी प्रकृति' के रूप में चाहते हैं। 'नपुंसक' शब्द का प्रयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की प्रजनन क्षमता की अनुपस्थिति को दर्शाने के लिए किया जाता है।भगवान राम,महाकाव्य रामायण में,14 साल के लिए राज्य से निर्वासित होने के बाद जंगल के लिए जा रहे थे,अपने अनुयायियों की ओर मुड़ते हैं और सभी 'पुरुषों और महिलाओं' को शहर लौटने के लिए कहते हैं। उनके अनुयायियों में,अकेले किन्नर इस दिशा से बंधे हुए महसूस नहीं करते हैं और उनके साथ रहने का फैसला करते हैं। उनकी भक्ति से प्रभावित होकर,राम ने उन्हें बच्चे के जन्म और विवाह जैसे शुभ अवसरों पर लोगों को आशीर्वाद प्रदान करने की शक्ति प्रदान की। हिंदू पौराणिक कथाओं में,बहुचर माता जो एक हिंदू देवी हैं,को भारत में हिजड़ा समुदाय का संरक्षण माना जाता है। वहीं अर्जुन ने अज्ञात वास में वृहन्लता का रूप धारण किया और शिखंडी इतिहास की गाथा का महत्वपूर्ण पात्र रहा। भगवान शिव के अर्द्धनारीश्वर के स्वरूप को भी कहाँ अनदेखा किया जा सकता है। यद्यपि हमारे प्राचीन रीति-रिवाजों और प्रथाओं में किन्नरों को मान्यता दी गई थी और महत्व दिया गया था,फिर भी स्थिति पीढ़ी दर पीढ़ी बिगड़ती जा रही है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. भारत में ट्रांसजेंडर समुदाय के सामने आने वाली कुछ प्रमुख समस्याओं पर प्रकाश डालना;
2. समाज को ट्रांसजेंडर समुदाय की समस्याओं और उन के बढ़ते कदमों से अवगत कराना;
3. उनकी स्थिति में सुधार के लिए सुझाव देना।

कार्यप्रणाली

अध्ययन लेखों,प्रकाशनों और वेबसाइटों से एकत्र किए गए माध्यमिक डेटा की मदद से आयोजित की गयी है।

साहित्य में किन्नर विमर्श

साहित्य के क्षेत्र में किन्नर विमर्श पर तेजी से कार्य हुआ। हिंदी में नई सदी के आरम्भ से इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। नतीजन,नीरजा माधव का उपन्यास 'यमदीप',निर्मला मुराड़िया का 'गुलाम मण्डी',प्रदीप सौरभ का 'तीसरी ताली',महेंद्र भीष्म का 'किन्नर कथा' और चित्र मुद्गल का 'पोस्ट बॉक्स नम्बर 203,नाला सोपारा' आदि उपन्यासों के साथ-साथ कहानियों में 'बिंदा महाराज','किन्नर','इज्जत के रहबर', 'नेग','बीच के लोग','त्रासदी','ई मुर्दन का गाँव','हिजड़ा',आदि कहानियों में किन्नर व्यथा का यथार्थ दिखाई देता है। बिंदा महाराज कहानी में कहानी के मुख्या पात्र बिंदा के माध्यम से पिता द्वारा तिरस्कार,पति का सुख,पत्नी की प्रतीक्षा,बच्चों का मोह,आदि से वंचित होने की मानसिक पीड़ा को दर्शाने का प्रयास। 'बिंदा' कहानी में इन सभी समस्यायों से संघर्ष करता हुआ अपने अस्तित्व को साबित करने का प्रयास करता है कि मैं भी इस समाज का अंग हूँ एक इन्सान हूँ। गरिमा संजय दूबे की 'पन्ना बा' कहानी एक किन्नर की दारुल स्थिति का चित्रण करती है जो जीते-जीते तो अपमान सहता ही है और मरने पर भी जूतों से पीटा जाता है। यह कहानी न केवल किन्नर व्यथा को दर्शाती है बल्कि मानव मस्तिष्क पर भी प्रभाव डालती है कि **"किन्नर की दुआ की कोई होड़ नहीं और उसकी बद्दुआ का कोई तोड़ नहीं"**। वहीं 'नेग' कहानी उनके परम्परागत रहन-सहन और विवाहों में उनके नेग मांगने की कथा पर आधारित है जिसमें बेटी के जन्म पर किन्नर खुश हो कर नाचना चाहता है और कहता है **"लो चची... हमारी तरफ से नेग...तुम्हारे घर में लक्ष्मी आई है... ये बताने में कैसी शर्म"**। इसी श्रेणी में पूनम पाठक की 'किन्नर' कहानी समाज में किन्नरों के प्रति घटिया मानसिकता को दर्शाती है जहाँ कहानी में पात्रा मानसी किन्नर के साथ बस में सीट साँझा नहीं करती और अंत में वही किन्नर मानसी को लडकों द्वारा छेड़ने पर उसकी मदद करता है। श्री कृष्ण सैनी की 'हिजड़ा' एक मार्मिक कहानी है जिसमें किन्नरों की दया,ममता और मानवीयता के दर्शन होते हैं।

फिल्मों में किन्नर विमर्श

सिनेमा का रचना संसार बहुत विस्तृत है। जहाँ सिनेमा समजा का आईना है वहाँ समाज की स्थितियों के बदलाव में भी सहायक है। यदि किन्नर विमर्श की बात की जाये तो इसको उकेरने में समय-समय पर सिनेमा ने अपना भरपूर योगदान दिया है। सिनेमा का एक ऐसा समय भी था जहाँ किन्नरों को केवल हास्य के रूप में ही उकेरा जाता था। लेकिन बदलती परिस्थितियों में इनका रूप भी बदलता गया। जहाँ 'अमर,अकबर,एंथनी' जैसी फिल्मों में बेटे के जन्म होने पर किन्नर बधाई देते हुए दिखाई देते हैं वहीं समय की बदलती करवट ने 'संघर्ष','सड़क','तमन्ना','वेलकम टू सज्जनपुर','सलाम बॉम्बे' जैसी फिल्मों में इनकी उपस्थिति को दर्ज भी करवाया। 'तमन्ना' फिल्म में हिजड़े के जीवन के दुखद पक्ष मानवीयता और संवेदना को प्रस्तुत करते हुए समाज में इनके प्रति व्याप्त भय को दूर करने का प्रयास है। इन्हें भी आम इंसानों की तरह भूख प्यास लगती है। इनका भी दिल धड़कता है। हिंदी सिनेमा में किन्नर आज रियल लाइफ से रील लाइफ तक पहुँच चुके हैं। इनके जीवन पर बनी फिल्मों में कल्पना लाज़मी की 'दरमियाँ',महेश भट्ट की 'तमन्ना',श्रीधर रंगायन की 'गुलाबी आईना',योगेश भाद्वाज की 'शबनम मौसी',विश्वास पाटिल की 'रज्जो',श्याम बेनेगल की 'वेलकम टू सज्जनपुर' इत्यादि शामिल हैं। 'शबनम मौसी' जो मध्य प्रदेश की विधायक रही उनका किरदार आशुतोष राणा ने निभाया। 'वेलकम टू सज्जनपुर' में मुन्नी मुकरी एक किन्नर है जो सज्जनपुर गाँव से सरपंची का चुनाव लड़ता है और एक पात्र महादेव के इस बात पर बल देने पर कि तुझे वोट कौन देगा तो वह बड़े ही जोर-शोर से उत्तर देती है **"मुझे सब देंगे,मैं सबकी हूँ,सब मेरे हैं" और फिल्म में एक नारा गूंजता है "दुःख की घड़ियाँ बीतेंगी और मुन्नी बाई जीतेंगी"** । इसी अपनत्व की भावना से वह दंगाई बाजियों से 327 मतों से विजयी भी होती है। मुन्नी का जीतना एक ऐतिहासिक घटना बनता है जो इस उपेक्षित वर्ग को समजा की मुख्या धारा से जोड़ता है। 'रज्जो' फिल्म में महेश मांजेकर ने कोठा चलाने वाली किन्नर 'बेगम' का किरदार निभाया है। बेगम अपनी बहन और जीजा के हाथों बेच दी जाती है क्योंकि उन्होंने एक फ्लैट खरीदना होता है और जिस दलाल को वह बेची जाती है वो बार में उससे डांस करवाकर पैसा कमाना चाहता है। और तीसरी ओर बेगम अपनी ही कोठे की लड़की रज्जो का चंदु से प्यार देखकर उसे पाने धंधे से आजाद कर देती है। जहाँ बहन,जीजा और दलाल में एक स्त्री और पुरुष का रोप होते हुए भी इंसानियत का भाव नजर नहीं आता वहीं बेगम मानवीयता की जीती जगती तस्वीर के रूप में हमारे सामने आती है। 'तमन्ना' फिल्म में परेश रावल ने टिक्कू का किरदार निभाते हुए दिल्ली की एक सच्ची घटना को पर्दे पर अंजाम दिया। कुछ लोग बेटी को कचरे के डिब्बे में डालते हैं,कुछ औलाद के लिए तरसते हैं और कुछ किन्नर टिक्कू जैसे जो न तो जन्म देने में सक्षम हैं,न परिवार बना पाते हैं,न घर का सुख भोग सकते हैं; ऐसी संवेदनशीलता को इस फिल्म में दर्शाया गया है। फेंकी जाने वाली बच्ची को टिक्कू बड़ा अच्छे से पलता पोसता है लेकिन अंत में वही लड़की उसको हिकारत की दृष्टि से उसे देखती है और कहती है, ***"कौन है ये आदमी सलीम चाचा,यह मेरे अब्बू नहीं हो सकते। मैं तुम्हारी बेटी नहीं हो सकती। मुझे यह सोचकर ही उल्टी आती है कि इन हाथों ने मुझे छुआ भी होगा। यह आदमी एक हिजड़ा है।"*** एक इंसान का दूसरे इंसान से केवल इस बात से घिन्न करना कि उसकी स्थिति अक्षम में है,यह कहाँ तक उचित दिखाई देता है? और सलीम चाचा का यह **कहना "अगर यह हिजड़ा है तो लानत है हम दुनिया भर के मर्दों पर"**। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं इस संवाद ने पूरे किन्नर जीवन की सार्थकता को सिद्ध कर दिया।

स्थिति में सुधार की आशा की किरण

जौनपुर,मीरगंज क्षेत्र में शहीदों का गांव व आदर्श सांसद करियांव गांव का प्रतिनिधित्व ग्रामवासियों ने आशा किन्नर के हाथ में सौंप दिया। पंचायत त्रिस्तरीय चुनाव के दौरान करियांव गांव निवासी राजकुमारी की गद्दी पर आशा किन्नर ने करियांव गांव से प्रधान पद की प्रत्याशी बनकर अपना भाग्य आजमाया। जनता ने उन पर विश्वास करते हुए 826 मतों से जीत भी हासिल करा दी। यह घटना क्षेत्र सहित आसपास के लोगों में चर्चा का विषय बन गया है। इसी के साथ,देश की पहली किन्नर विधायक मध्य प्रदेश विधानसभा के लिए 2000 में चुनी गईं। मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के सोहागपुर निर्वाचन क्षेत्र से वर्ष 2000 के उपचुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में शबनम मौसी ने शानदार जीत दर्ज कर देश की राजनीति के इतिहास में नया पन्ना जोड़ दिया। 14 से अधिक भारतीय भाषाओं की जानकार शबनम मौसी को उस समय 44.08 फीसदी वोट मिले थे। डॉक्टर प्रिया केरल की रहने वाली है,वो केरल के साथ भारत की भी पहली किन्नर डाक्टर है। डॉक्टर प्रिया का कहना है कि वो सामान्य बीमारों के साथ ही असहायों की मदद के लिए भी हमेशा आगे रहेगी। डॉक्टर प्रिया ने भारत के साथ-साथ पूरी दुनिया में किन्नरों की एक अलग ही मिसाल कायम की है।

उपसंहार

अतः किन्नर विमर्श अभी अपरिपक्व अवस्था में है। समाज की वैचारिकी कहीं न कहीं इसे अपनाने में आज भी हिचकिचाहट महसूस करती है लेकिन सुप्रीम कोर्ट के दखल के बाद और स्वयं के अस्तित्व को तलाशते हुए इस समुदाय के बढ़ते कदमों से इस स्थिति में परिवर्तन नजर आ रहा है। इंसान को इंसान समझा जाये तभी उचित है। जब वह वर्गों में बंट जाता है वहां मानवीयता भ्रमित हो जाती है और समाज इस भ्रमित मार्ग से एक रोशनी की ओर अग्रसर होने को है।

संदर्भित पुस्तकें:

- कुमार,अरुण,यहाँ से सिनेमा,साहित्य भंडार,इलाहबाद।
- दयाशंकर,समाज,साहित्य और सिनेमा,संपादक पुनीत विसारिया,राजनारायण शुक्ल,भारतीय सिनेमा का सफरनामा,एटलान्टिक पब्लिशर्स,दिल्ली।
- मिसाल,चंद्रकांत,सिनेमा और संहित्य का अन्तःसम्बन्ध,हिंदी साहित्य निकेतन बिजनौर।
- निर्मला मुराड़िया,गुलाम मण्डी,सामयिक प्रकाशन,दिल्ली
- भीष्म महेंद्र,किन्नर कथा,सामयिक प्रकाशन,दिल्ली
- माधव नीरजा,यमदीप,सामयिक प्रकाशन,दिल्ली
- मुद्गल चित्रा,पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नालासुपारा

संदर्भित फ़िल्में:

- शबनम मौसी,योगेश भरद्वाज,2005
- तमन्ना,महेश भट्ट,1998
- रज्जो,विश्वास पाटिल, 2013

संदर्भित वेब स्रोत्र:

- https://www.jagran.com/uttar-pradesh/varanasi-city-asha-kinnar-to-represent-mp-adarsh-village-kariyanv-in-jaunpur-by-826-votes-21611650.html
- https://www.punjabkesari.in/national/news/mainstream-of-kinnar-society-parliament-approved-the-bill-1087924

I. HTTPS://NAVBHARATTIMES.INDIATIMES.COM/ELECTIONS/LOK-SABHA-ELECTIONS/NEWS/LOK-SABHA-CHUNAV-2019-AFTER-BHAVANI-AAP-ALLAHABAD-CANDIDATE-KNOW-THE-THIRD-GENDER-AND-KINNARS-IN-INDIAS-ELECTIONS-FRAY/ARTICLESHOW/68652562.CMS